इक्षु समाचार

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

वर्ष 1 अंक 2 सितम्बर, 2006

निदेशक की कलम से

उपोष्ण क्षेत्रों में गन्ने की खेती में एक बार बुवाई के बाद लगभग 10–12 माह की नौलख फसल तथा लगभग इतनी ही अवधि वाली दो–तीन पेड़ी फसलें ली जाती हैं। इस प्रकार एक बार बुवाई के पश्चात् इतने अधिक समय तक खेत में रहने के कारण गन्ना की फसल में बुवाई की विधियों का विशेष महत्व है। अनुसंधानों द्वारा सिद्ध हो चुका है कि उपोष्ण क्षेत्रों में गन्ना की उपज में मिल के पेरने योग्य गन्नों की संख्या का सर्वाधिक (लगभग 70 प्रतिशत) योगदान होता है। अतः अनुकूलतम् दशाओं में सही समय पर उन्नत विधि द्वारा गन्ने की बुवाई करके मिल योग्य गन्नों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। उन्नत बुवाई की विधियों की मौलिक अवधारणा, फसल ज्यामिति में सुधार करके अवांछित जैविक हानि को रोकना, मृदा के विभिन्न संस्तरों से पोषक तत्वों का उपयोग करके उनकी उपयोग क्षमता में वृद्धि करना तथा प्रकाशीय ऊर्जा का अधिकतम् दोहन करके, रासायनिक ऊर्जा (उपज) में वृद्धि करने की होती है।

विभिन्न उद्देश्यों के लिए गन्ना उगाने की विधियाँ भी स्वाभाविक रूप से भिन्न होती हैं। किसी नवविकसित गन्ना प्रजाति को बीज के लिए त्वरित बहुगुणित करने एवं पिछेती दशाओं में गन्ना बोने के लिए एस. टी.पी.विधि उपयुक्त पायी गयी है परन्तु अधिक गन्ना उपजाने के दृष्टिकोण से गोल गड्ढ़ा बुवाई विधि श्रेयस्कर मानी गयी है। यह विधि उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त पंजाब, महाराष्ट्र एवं अन्य प्रगतिशील गन्ना उत्पादक राज्यों में लोकप्रिय हो रही है। इस विधि की पेड़ी भी अपेक्षाकृत अधिक उपज देती है। गेहूँ के बाद गन्ने की फसल बोने पर उसको ब्यांत समय कम मिलता है, फलतः गन्ने की उपज कम हो जाती है। इस कमी को दूर करने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा विकसित गन्ना + गेहूँ की एक साथ बुवाई करने की फर्ब विधि के अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं।

इस प्रकार बुवाई की नवीनतम् विधाओं को अपनाकर गन्ने की उपज में वृद्धि की जा सकती है एवं शर्करा संबंधी भावी आवश्यकताओं के अनुरूप गन्ने का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

(रतन लाल यादव)

अनुसंधान विशिष्टताएं

- प्रत्येक चार पंक्तियों के बाद, एक पंक्ति छोड़कर, 18 सेंमी. की दूरी पर रोपित धान वाले खेत में गन्ने की बुवाई सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में करने पर सर्वाधिक गन्ना उपज (91.7 टन हे.$^{-1}$) पाई गई जो कि धान – गन्ना + आलू तथा धान–आलू–गन्ना फसल प्रणालियों से सांख्यिकीय स्तर से ज़्यादा थी।
- पारम्परिक विधि की अपेक्षा गन्ने की बुवाई, 25 प्रतिशत अधिक बीज गन्ना के साथ दोहरी पंक्ति विधि (30 : 120 सेंमी.) द्वारा करने पर पेड़ी गन्ना में स्थान रिक्तता 10.7 से 25.4% तक कम पायी गयी।
- एकान्तर कूँडों के मध्य पताव बिछाने एवं कूँडों में *ट्राइकोडरमा विरिडी* का प्रयोग करने पर सांख्यिकीय स्तर से सर्वाधिक पेड़ी गन्ना उपज (68.3 टन हे.$^{-1}$) व चीनी उपज (7.72 टन हे.$^{-1}$) पाई गयी।
- शीतकाल में प्रारम्भ की गई पेड़ी में प्रेसमड 15 टन हे.$^{-1}$ + फास्फो जैविक कल्चर के प्रयोग से अनुपचार की अपेक्षा, साँख्यिकीय स्तर से पेड़ी गन्ना उपज (67.9 टन हे.$^{-1}$) एवं चीनी उपज (8.0 टन हे.$^{-1}$) अधिक पायी गयी।
- गन्ने में प्रेसमड 10 टन हे.$^{-1}$ + *एसिटोबैक्टर* जैव कल्चर के प्रयोग से सर्वाधिक मृदा सूक्ष्मजीवाणु कार्बन (1466 मिग्रा कार्बन किग्रा.$^{-1}$ मृदा) एवं मृदा सूक्ष्मजीवाणु नत्रजन (25.7 मिग्रा नत्रजन किग्रा.$^{-1}$ मृदा) अंकित की गयी। इस उपचार से सर्वाधिक पेड़ी गन्ना उपज (74.9 टन हे.$^{-1}$) प्राप्त हुई जो कि नियंत्रण की तुलना में 78.6 प्रतिशत ज़्यादा थी।
- गन्ने के साथ गेहूँ, मक्का, मूँग, उर्द आदि की एक साथ बुवाई हेतु संस्थान द्वारा सहफसली गन्ना बुवाई यंत्र विकसित किया गया है। यह यंत्र एक साथ दो कूँड तथा दो रेज्ड बेड्स बनाकर कूँडों में गन्ने की बुवाई तथा सह फसलों को रेज्ड बेड्स पर बुवाई करके मिट्टी से ढक देता है। बुवाई में गन्ने के टुकड़ों की कटाई, खाद व दवा का छिड़काव भी सम्मिलित है। ट्रैक्टर (35 एच.पी.) द्वारा चालित इस यंत्र की कार्य क्षमता लगभग 2.0 हे. प्रति दिन तथा कीमत 42,000/– रुपये है। इसकी अभिकल्पना को पेटेंट कराने की प्रक्रिया प्रगति पर है।

प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण

राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम

गन्ना विकास निदेशालय, लखनऊ द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय स्तर के तीन दिवसीय पाँच प्रशिक्षण कार्यक्रम – गन्ने की उन्नत बुवाई की विधियाँ, बावक एवं पेड़ी फसल में समेकित खर–पतवार नियंत्रण, गन्ने में समेकित पोषक तत्व प्रबन्धन, गन्ने के नाशिकीटों एवं व्याधियों का जैविक नियंत्रण तथा कटाई उपरान्त गन्ना प्रबन्धन विषयों पर आयोजित

किए गए। प्रशिक्षणों का आयोजन फरवरी 14 से मार्च 10, 2006 के मध्य किया गया। इन प्रशिक्षणों से कुल 96 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

गन्ना विकास कर्मियों का प्रशिक्षण

गन्ना विकास कर्मियों के लिए गन्ना प्रबन्धन एवं विकास विषय पर जुलाई 1–31, 2006 तक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश एवं बिहार प्रान्तों से 20 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

विद्यार्थियों/शोधार्थियों का लघुकालिक प्रशिक्षण

गन्ने में सूक्ष्म प्रवर्धन तकनीक, जैव प्रौद्योगिकी, सूक्ष्म–जैव विज्ञान व जैव रसायन में वर्तमान शोध कार्यक्रमों के अन्तर्गत कुल 77 स्नातक व स्नातकोत्तर प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ के दो प्रवक्ताओं को ऊतक संवर्धन विषय पर प्रशिक्षित किया गया।

पशु पालन शिविर का आयोजन

दुधारू पशुओं में बाँझपन निवारण शिविर का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा ग्राम इस्माइल नगर में 9 मई, 2006 को किया गया। शिविर में 250 पशु पालकों ने अपने पशुओं के साथ भाग लिया। बाँझपन निवारण हेतु 100 किग्रा. खनिज लवण मिश्रण, 90 ली, ट्राइबेसिक कैल्शियम एवं अन्तःजीवी कीट निवारण की 35 गोलियाँ पशु पालकों को निःशुल्क वितरित की गईं।

इसके अतिरिक्त परिसर के अन्दर विभिन्न विषयों पर बारह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें ग्राम पकरा, इस्माइल नगर एवं कमलापुर के कुल 234 पुरुष एवं महिला कृषकों ने भाग लिया। परिसर के बाहर प्रशिक्षण कार्यक्रमों से कुल 109 कृषक लाभान्वित हुए।

घटनाक्रम

शोध सलाहकार समिति की बैठक

संस्थान की शोध सलाहकार समिति की 12वीं बैठक, 8–9 फरवरी, 2006 को आयोजित की गई। इस बैठक में समिति के अध्यक्ष, डा. एस. एस. बघेल, सदस्य, डा. एस. बी. जाधव, डा. डी. पी. मिश्रा, डा. राकेश तुली एवं डा. ए. एन. मुखोपाध्याय, संस्थान के निदेशक, डा. आर.एल. यादव, सदस्य–सचिव, डा. धर्मवीर यादव, समस्त विभागाध्यक्षों तथा वैज्ञानिकों ने भाग लिया। सलाहकार समिति ने संस्थान की उपलब्धियों पर संतोष व्यक्त किया तथा भावी शोध कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

एस.आर.सी. बैठक

स्टाफ रिसर्च काउन्सिल (एस. आर. सी.) की बैठक संस्थान के निदेशक, डा. आर. एल. यादव की अध्यक्षता में अगस्त 2–4 एवं सितम्बर 6, 2006 को सम्पन्न हुई। वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान परियोजनाओं के अन्तर्गत प्रस्तुत किए गए शोध परिणामों की गहन समीक्षा की गई। अध्यक्ष महोदय ने वैज्ञानिकों को निर्देशित किया कि एन.ए.आई.पी. से वित्तीय सहायता पाने के लिए उच्च गुणवत्ता की शोध परियोजनाएं तैयार की जानी चाहिए।

ऊतक संवर्धित बीज गन्ना के मानकीकरण संबंधी बैठक

अखिल भारतीय समन्वित परियोजना (गन्ना) के अन्तर्गत डा. ए. एन. मुखोपाध्याय, पूर्व कुलपति, आसाम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहट की अध्यक्षता में बीज गन्ना एवं ऊतक संवर्धित बुवाई सामग्री के मानकीकरण से सम्बन्धित विषयों पर 8 मई, 2006 को बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक में ऊतक संवर्धित गन्ना बुवाई सामग्री के मानक मुद्दों को चिन्हित करने के लिए, बीज गन्ना के मानकों हेतु विधियाँ विकसित करना एवं उत्तर प्रदेश राज्य में बीज गन्ना प्रमाणीकरण मानकों को विकसित करने के मुद्दों पर चर्चा की गयी। डा. रतन लाल यादव, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए विषय पर प्रकाश डाला। डा. ओम कुमार सिन्हा, परियोजना समन्वयक (गन्ना) ने बीज गन्ना मानक निर्धारण के कालानुक्रम विकास की जानकारी दी।

गन्ने में ऊतक संवर्धित बुवाई सामग्री के मानकों के निर्धारण हेतु बौद्धिक मंथन सत्र, वसन्त दादा शर्करा संस्थान, पुणे में जून 9, 2006 को आयोजित किया गया जिसमें गन्ने में ऊतक संवर्धित बीज सामग्री के मानकों के निर्धारण व बीज गन्ना प्रमाणीकरण मानक से सम्बन्धित विधियों के निर्धारण पर विस्तृत रूप से चर्चा हुई।

समापन सत्र में डा. रतन लाल यादव, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। यह समिति अपनी संस्तुतियाँ परिषद् को प्रस्तुत करेगी।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा अगस्त 15, 2006 को संस्थान के मुख्य परिसर में झंडारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक, डा. आर.एल. यादव ने अपने प्रेरक सम्बोधन भाषण में निष्ठापूर्वक कार्य निष्पादन पर जोर दिया।

नवीनीकरण कार्य प्रगति पर

दसवीं पंचवर्षीय योजना के अनुरूप, नवीनीकरण कार्य होने से संस्थान की शोध सुविधाओं में वृद्धि हुयी है एवं परिदृश्य का कायाकल्प हो गया है।

संस्थान तब

संस्थान अब

आगंतुक

डा. एम.वी. राव, पूर्व कुलपति, आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, आन्ध्र प्रदेश ने अगस्त 17, 2006 को संस्थान का भ्रमण किया। डा. राव ने सभी विभागाध्यक्षों/प्रभारी अनुभागों के साथ शोध कार्यक्रमों के बारे में विचार–विनिमय किया।

नियुक्तियाँ

- डा. जसवंत सिंह, विभागाध्यक्ष, कृषि अभियंत्रण, 20 जनवरी, 2006
- डा. रमन कपूर, विभागाध्यक्ष, फसल सुधार, 5 फरवरी, 2006
- श्री निकुंज बरनवाल, आशुलिपिक ग्रेड–3, 12 जून, 2006
- डा. आर.के. सिंह, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, 22 जुलाई, 2006
- श्री विवेक पुरवार, वरिष्ट प्रशासनिक अधिकारी, 11 सितम्बर, 2006
- श्री दीपक कुमार, एस.एस. ग्रेड–1, 7 जून, 2006

सेवानिवृत्त

सर्वश्री जगदीश चन्द्रा, प्रधान वैज्ञानिक, 31.1.2006, वसी अहमद, चालक (टी–4), 31.5.2006, डा. राम सनेही द्विवेदी, प्रधान वैज्ञानिक, 31.7.2006 तथा डा. राजपति द्विवेदी, प्रधान वैज्ञानिक, 31.7.2006 को सेवानिवृत्त हो गए।

निधन

श्री ओम प्रकाश, एस.एस. ग्रेड–3 का 31.1.2006 एवं डा. हेमन्त प्रसाद पाण्डेय, तकनीकी अधिकारी (टी–6) का 23.8.2006 को आकस्मिक निधन हो गया। संस्थान के मुख्य परिसर में समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की शोक सभा में उनके निधन पर हार्दिक संवेदना व्यक्त की गयी एवं परिवारजनों को शोक संदेश प्रेषित किया गया।

वाह्य वित्त पोषित शोध परियोजनाएं

शोध परियोजना	वित्त अभिकरण	बजट (रु. लाख में)
एनहेन्सिंग फील्ड वाटर यूज़ इफिसियन्सी इन शुगरकेन क्रापिंग सिस्टम थ्रु फर्ब्स	उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद्, लखनऊ	8.41
इवैल्यूवेएन आफ वेलग्रो – एन आर्गेनिक मैन्योर आफ शुगरकेन	आई.टी.सी.लि., गुन्टूर	2.00
इवैल्यूवेशन आफ वेलपार के 4 60 डब्ल्यू पी. हर्बिसाइड फार कंट्रोल आफ शुगरकेन वीड्स आन पोस्ट इमरजेंस एप्लिकेशन	ई.एल.डू पांट इ. प्र.लि., गुड़गाँव	3.0
काम्पेरेटिव परफारमेंश ऑफ डिफरेंट ग्रेड्स ऑफ एन.पी.के. मिक्स्ड फर्टिलाइजर्से आन यील्ड ऑफ सुगरकेन	श्रीराम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स, नई दिल्ली	1.5
फील्ड इवैलुएशन ऑफ सिन्थेटिक सेक्स फेरोमोन ल्योर्स आफ सुगरकेन टाप बोरर	मेसर्स पेस्ट कन्ट्रोल (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, बैंगलूर	2.00
सीड प्रोडक्शन ऑफ एग्रीकल्चरल क्रॉप्स एण्ड फिशरीज़	डिपार्टमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड कोआपरेशन	83.75

संस्थान–चीनी मिल की इण्टरफेस बैठक

संस्थान के क्षेत्रीय शोध केन्द्र, मोतीपुर, बिहार में 4 सितम्बर, 2006 को संस्थान–चीनी मिल इण्टरफेस बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में बीज गन्ना के उत्पादन एवं वितरण, क्षेत्रीय गन्ना उत्पादकों की समस्याओं एवं परिष्कृत कृषि यंत्रों की आवश्यकताओं पर चर्चा हुयी।

हिन्दी चेतना पखवाड़ा

वैज्ञानिक लेख एवं कार्यालय कार्य अधिकाधिक राजभाषा हिन्दी में सुनिश्चित करने के उद्देश्य से संस्थान में सितम्बर 14 से 30, 2006 तक हिन्दी चेतना पखवाड़ा आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत संस्थान स्तर पर सभी वर्ग के कर्मचारियों की सहभागिता के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा आमन्त्रित डॉ. राममूर्ति सिंह, निवृत्त, अपर गन्ना आयुक्त, उत्तर प्रदेश ने गन्ना नियंत्रण आदेश–1966 शीर्षक पर सारगर्भित व्याख्यान दिया।

प्रकाशित एवं स्वीकृत शोध पत्र

- सुमन अर्चना, मेंहीलाल, ए.के. सिंह एवं आशा गौर (2006), माइक्रोबियल बायोमास टर्नओवर इन इंडियन सबट्रापिकल स्वायल्स अन्डर डिफरेंट सुगरकेन इण्टरक्रापिंग सिस्टम। *एग्रोनामी जरनल* (इन प्रेस)।
- सिंह ए. के., मेंहीलाल एवं एस. आर. प्रसाद (2006), इफेक्ट आफ रो स्पैसिंग एण्ड नाइट्रोजन आन रैटूनेबिलिटी आफ अर्ली मेच्योरिंग हाई सुगर जीनोटाइप्स ऑफ सुगरकेन (*सैकरम स्पेसीज़* हाइब्रिड्स)। *इंडियन जरनल आफ एग्रीकल्चरल साइंसेज* 76 (2) : 108–110।
- सिंह ए. के., मेंहीलाल, एस. आर, प्रसाद एवं टी. के. श्रीवास्तव (2006)। प्रोडक्टिविटी एण्ड प्रोफिटेबिलिटी ऑफ विंटर इनिसिएटेड सुगरकेन रैटून थ्रू इण्टरक्रापिंग ऑफ फारेन लेग्यूम्स एण्ड नाइट्रोजन न्यूट्रीशन। *इंडियन जरनल ऑफ एग्रोनामी* (इन प्रेस)।
- वर्मा, आर. पी. एवं रामसेवक यादव, (2006)। किसानों के खेतों पर पेड़ी तकनीक प्रगृहण की स्थिति व समस्याएं। *नर्मदा कृषि परिवार* 17 (7) : 6–10।
- श्रीवास्तव संगीता, विजय सिंह, पी.एस., गुप्ता, ओ.के. सिन्हा एवं ए. के. बैठा (2006)। नेस्टेड पी.सी. आर. एस्से फॉर डिटेक्शन ऑफ शुगरकेन ग्रासी सूट फाइटोप्लास्मा इन दि लीफ हॉपर वेक्टर *डेल्टोसिफेलस वल्गेरिस* दाश विराक्तामठ : ए फर्स्ट रिपोर्ट प्लान्ट पैथोलोजी (यू. के.) 55 : 25–28।
- श्रीवास्तव संगीता, पी.एस. गुप्ता, पी.के., सिंह, जे. सिंह एवं राधा जैन (2006) एसेस्मेन्ट ऑफ मालेक्युलर जेनेटिक डाइवर्सिटी इन *सैकेरम स्पानटेनियम* जर्मलाज़्म यूजिंग माइक्रोसैटेलाइट एण्ड आर.ए.पी.डी. मार्क्स. नेशनल सिम्पोसियम ऑन मोलेक्युलर ब्रीड़िंग इन क्राप प्लान्ट्स मार्च 20–21, आई.आई.वी.आर., वाराणसी पृ. 53।

- स्वप्ना एम. एवं संगीता श्रीवास्तव (2006) आइडेन्टिफिकेशन ऑफ मार्क्स फॉर सुगर एक्युमुलेशन इन सुगरकेन – ए मॉलेक्युलर एप्रोच. नेशनल सिम्पोसियम ऑन मॉलेक्युलर ब्रीड़िंग इन क्राप प्लान्ट्स, मार्च 20–21, आई.आई.वी.आर., वाराणसी।

सदस्य नामित

इंडियन सोसाइटी ऑफ एक्सटेंशन प्रोफेशनल्स (आई.एस.ई.पी.), करनाल द्वारा इंडियन जरनल ऑफ एक्सटेंशन साइंस एवं आई.एस.ई. पी. न्यूजलेटर हेतु डा. ए.के. शाह, वैज्ञानिक (एस. एस.) को सदस्य, सम्पादक मण्डल नामित किया गया है।

मानव संसाधन विकास

विदेश भ्रमण

डा. रमन कपूर, विभागाध्यक्ष, फसल सुधार ने चुकन्दर की खेती तथा संसाधन के अध्ययन एवं महाराष्ट्र में दो, 100 टी.बी.डी. पाइलट प्लान्ट्स की स्थापना हेतु 2–10 जून, 2006 तक मिश्र व मोरक्को देशों का भ्रमण किया।

पी.एच. डी. उपाधि

श्री दिनेश चन्द्र रजक, तकनीकी अधिकारी को चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा सितम्बर 4, 2006 को कीट विज्ञान में पी.एच. डी. की उपाधि प्रदान की गई।

प्रशिक्षण

- डा. ईश्वर सिंह, वैज्ञानिक (एस.एस.) ने चौधरी चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा आयोजित खाद्य सुरक्षा हेतु कृषि में संसाधन संरक्षण तकनीकियाँ विषय पर जनवरी 28 से फरवरी 6, 2006 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- डा. बी.एल. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में आयोजित डस प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 24.2.06 से 27.2.06 तक भाग लिया।
- डा. पी. के. सिंह ने सीड साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी डिवीजन, आइ. ए.आर.आई तथा डी.ए.सी., कृषि मंत्रालय द्वारा आयोजित टेस्टिंग ऑफ प्लान्ट वैराइटीज़ फॉर डस–प्रिंसिपल एण्ड प्रोसीज़र्स नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 6–10 मार्च, 2006 तक भाग लिया।
- श्री महेन्द्र सिंह, टी 7–8 एवं श्री गोपी कृष्ण गुप्त, टी–6 ने आई. एस.टी.एम., नई दिल्ली द्वारा आयोजित तकनीकी अधिकारियों के लिए प्रबंधकीय निपुणता पर 22.5.2006 से 26.5.2006 तक विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- श्री राकेश कुमार सिंह, कार्यक्रम सहायक, पशुपालन ने राज्य प्रबन्धन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा आयोजित एग्रीकल्चर इकोलॉजिकल सिचुएशन (ए.ई.एस.) टीम प्रशिक्षण कार्यक्रम में 1–7, जुलाई 2006 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- श्री राजीव लाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी को एम.डी.आई., गुड़गाँव में पोस्ट ग्रेजुएशन डिप्लोमा प्रोग्राम इन पब्लिक पालिसी एण्ड मैनेजमेंट में 21 माह के प्रशिक्षण हेतु दिनांक 4.9.2006 को निर्मुक्त किया गया।
- श्री के.पी. यादव, सहा. प्रशासनिक अधिकारी ने सूचना अधिकारी अधिनियम विषय पर नार्म हैदराबाद द्वारा आयोजित कार्यशाला में अप्रैल 25–26, 2006 तक भाग लिया।
- श्री टी.एस.एन. मूर्ति, सहा. वित्त एवं लेखाधिकारी तथा श्री नागेश्वर लाल, वरि. लिपिक ने एन.ए.आई.पी. के तहत वित्त अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में जून 26–30, 2006 तक नई दिल्ली में भाग लिया।
- श्रीमती राजशंकर, वरि. लिपिक ने क्रय प्रक्रियाओं में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत सितम्बर 6–8, 2006 को आई.एस.टी. एम., नई दिल्ली में भाग लिया।

संगोष्ठी/सम्मेलनों अथवा वैज्ञानिक बैठकों में भागीदारी

- डा. एस.एन. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सस्य) ने दिनांक 4–9 अप्रैल, 2006 तक नई दिल्ली में आयोजित यू.एस.ए.आई.डी../यू.एस.डी. ए., परियोजना के अन्तर्गत प्रिंसिपल कम्पोनेन्ट एनालिसिस सेंसर बेस्ड नाइट्रोजन फर्टिलाइजेशन कार्यशाला में भाग लिया।
- डा. संगीता श्रीवास्तव तथा डा. एम. स्वप्ना ने प्रो. आसीस दत्ता, निदेशक, एन.सी.पी.जी.आर., नई दिल्ली द्वारा सी.डी.आर.आई., लखनऊ में 17 फरवरी, 2006 को दिये गये 31वें सर एड्वर्ड मेलेन्बी मेमोरियल ओरेशन में भाग लिया।
- डा. एस.एन. श्रीवास्तव एवं डा. रमन कपूर ने अप्रैल 2006 में चुकन्दर के प्रायोगिक निरीक्षण हेतु वसन्त दादा शर्करा संस्थान, पुणे तथा ए.आर.एस., एम.पी.के.के.वी., के. दिगराज महाराष्ट्र का भ्रमण किया।
- डा. रमन कपूर एवं डा. ए.डी. पाठक ने 14.2.2006 को पारले ग्रुप की नवनिर्मित चीनी मिल के चुकंदर द्वारा एल्कोहल उत्पादन क्षमता परखने हेतु लगाये गये प्रयोग का भ्रमण किया एवं आवश्यक सुझाव दिये।
- भा.ग.अ.सं. में ए.पी.सेस वित्त पोषित चुकन्दर परियोजना से सम्बद्ध वैज्ञानिकों के एक समूह ने चुकन्दर को पशु आहार के रूप में किये गये सफल प्रयोग के अध्ययन हेतु, एन.डी.बी.बी., सालोन, राय बरेली स्थित केन्द्र का जुलाई, 2006 को भ्रमण किया। यह पाया गया कि चुकन्दर की जड़ें अपने अधिक शर्करा एवं ऊर्जा मात्रा के कारण पशु–पोषण को संतुलित करती हैं जिससे बैलों व दुधारू पशुओं की कार्य क्षमता बढ़ जाती है।

प्रोन्नति

इस अवधि में तकनीकी वर्ग के 12, प्रशासनिक वर्ग के 2 एवं चतुर्थ श्रेणी के 8 कर्मियों को प्रोन्नत किया गया।

संरक्षक, प्रकाशक एवं सम्पर्क सूत्र : डा. आर.एल. यादव, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ
ई–मेल : iisrlko@sancharnet.in वेब–साइट : www.iisr.nic.in इन्टरनेट : iisr.ernet.local
संपादक : डा. डी.वी. यादव एवं जी.के. सिंह